

मुगलकालीन नगरों की ऐतिहासिक गतिशीलता का अध्ययन

Jogendra

Research Scholar, Calorx Teachers' University, Ahmedabad, Gujarat

Dr. Sunil Kumar Chaturvedi

Research Supervisor, Calorx Teachers' University, Ahmedabad, Gujarat

सारांश

मुगलकालीन भारत में नगर केवल निवास एवं व्यापार के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे राजनीतिक सत्ता, प्रशासन, आर्थिक गतिविधियों, शिल्प, संस्कृति तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हुए। मुगल साम्राज्य के विस्तार के साथ नगरों की संख्या, संरचना, कार्यप्रणाली और महत्त्व में निरंतर परिवर्तन दिखाई देता है। आगरा, दिल्ली, लाहौर, फतेहपुर सीकरी, अहमदाबाद, सूरत, बनारस तथा अन्य नगरों ने विभिन्न कालखंडों में राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की। शाही राजधानी का स्थानांतरण, प्रशासनिक पुनर्गठन, व्यापारिक मार्गों का विकास, सराय एवं सड़कों का निर्माण, कारीगरों और व्यापारियों का आगमन तथा राजकीय संरक्षण ने नगरीय विकास को प्रभावित किया। मुगलकालीन नगरों में महल, किले, बाजार, मस्जिदें, बाग, सराय और आवासीय क्षेत्रों की विशिष्ट संरचना विकसित हुई। साथ ही, नगरों में विभिन्न सामाजिक वर्गों, धार्मिक समुदायों और पेशागत समूहों के सह-अस्तित्व ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा दिया। प्रस्तुत अध्ययन मुगलकालीन नगरों की ऐतिहासिक गतिशीलता का विश्लेषण करते हुए उनके उद्भव, विस्तार, परिवर्तन, आर्थिक आधार, प्रशासनिक भूमिका तथा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि मुगलकालीन नगरीय व्यवस्था स्थिर न होकर राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के साथ निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया थी।

मुख्यशब्द- मुगलकाल, नगर, नगरीकरण, ऐतिहासिक गतिशीलता, शहरी विकास, मुगल प्रशासन, व्यापार, शिल्प, बाजार, राजधानी, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विकास।

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलकाल को राजनीतिक एकीकरण, प्रशासनिक पुनर्गठन, आर्थिक विस्तार तथा कला और संस्कृति के विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीतिक एवं आर्थिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव तत्कालीन नगरों के विकास पर भी पड़ा। इस काल में नगर केवल प्रशासनिक या आवासीय इकाइयाँ नहीं थे, बल्कि वे सत्ता, व्यापार, उत्पादन, धार्मिक गतिविधियों, शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक जीवन के प्रमुख केंद्र बन गए। इसलिए मुगलकालीन नगरों का अध्ययन केवल स्थापत्य या

नगरीय इतिहास तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे व्यापक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

मुगलकालीन नगरीय व्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी गतिशीलता थी। नगरों की स्थिति, आकार और महत्त्व समय के साथ बदलते रहे। किसी नगर का विकास शाही संरक्षण से हुआ तो किसी का महत्त्व व्यापारिक मार्गों, बंदरगाहों या स्थानीय उत्पादन के कारण बढ़ा। कुछ नगर राजनीतिक राजधानी बनने के कारण अत्यधिक विकसित हुए, जबकि राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ उनका महत्त्व कम भी हुआ। आगरा और दिल्ली जैसे नगरों का विकास मुगल सत्ता की राजनीतिक आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। इसी प्रकार लाहौर साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की राजनीतिक एवं व्यापारिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा। फतेहपुर सीकरी का विकास शाही संरक्षण की शक्ति को दर्शाता है, जबकि सूरत जैसे नगर समुद्री व्यापार के कारण आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बने।

मुगल शासकों ने नगरों के विकास में प्रत्यक्ष भूमिका निभाई। शाही महलों, किलों, मस्जिदों, बागों, बाजारों, सड़कों और सार्वजनिक निर्माणों ने नगरों की भौतिक संरचना को प्रभावित किया। राजधानी के रूप में विकसित नगरों में प्रशासनिक अधिकारियों, सैनिकों, व्यापारियों, कारीगरों, धार्मिक विद्वानों और विभिन्न सेवा समूहों का आगमन होता था। इससे नगरों की जनसंख्या बढ़ती थी और नए आवासीय तथा व्यावसायिक क्षेत्र विकसित होते थे। नगरों की संरचना में शाही परिसर और प्रशासनिक क्षेत्र के साथ-साथ बाजार, कारीगरों की बस्तियाँ तथा विभिन्न सामाजिक समूहों के निवास क्षेत्र भी शामिल होते थे। इस प्रकार नगरीय संरचना तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब थी।

मुगलकालीन नगरों की गतिशीलता का एक प्रमुख आधार आर्थिक गतिविधियाँ थीं। कृषि से प्राप्त अधिशेष का एक हिस्सा नगरों तक पहुँचता था और इससे शहरी बाजारों तथा उपभोग की व्यवस्था को बल मिलता था। नगरों में वस्त्र, धातु, आभूषण, कागज, चमड़े, लकड़ी और अन्य वस्तुओं से संबंधित अनेक प्रकार के शिल्प विकसित हुए। कारीगरों के संगठन और उत्पादन गतिविधियों ने नगरीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया। शाही दरबार की आवश्यकताओं ने उच्च गुणवत्ता वाले हस्तशिल्प और विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहित किया। दूसरी ओर, स्थानीय एवं दूरस्थ व्यापारियों की गतिविधियों ने बाजारों को विस्तृत बनाया।

व्यापारिक मार्गों और यातायात की व्यवस्था ने भी मुगलकालीन नगरों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। साम्राज्य के विभिन्न भागों को जोड़ने वाली सड़कों, सरायों और संचार व्यवस्था ने व्यापार एवं आवागमन को अपेक्षाकृत सुविधाजनक बनाया। प्रमुख नगरों का संपर्क ग्रामीण उत्पादन क्षेत्रों, क्षेत्रीय बाजारों और दूरस्थ व्यापारिक केंद्रों से स्थापित हुआ। समुद्री व्यापार से जुड़े नगरों का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ा, क्योंकि वे भारतीय वस्तुओं को व्यापक अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक नेटवर्क से जोड़ते थे। इस प्रकार मुगलकालीन

नगरीकरण केवल आंतरिक प्रशासन का परिणाम नहीं था, बल्कि क्षेत्रीय और अंतरक्षेत्रीय व्यापारिक संबंधों से भी प्रभावित था।

नगरों की सामाजिक संरचना भी अत्यंत विविध थी। मुगलकालीन नगरों में शासक वर्ग, मनसबदार, सैनिक, अधिकारी, व्यापारी, साहूकार, कारीगर, मजदूर, धार्मिक विद्वान तथा विभिन्न सेवा-समुदाय रहते थे। अलग-अलग क्षेत्रों से लोगों के आगमन के कारण नगर सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता के केंद्र बने। विभिन्न भाषाओं, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के संपर्क से नई सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ विकसित हुईं। नगरों में धार्मिक संस्थाएँ, शैक्षिक केंद्र और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी सक्रिय रहती थीं। इस कारण नगरीय जीवन ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया।

मुगलकालीन नगरों की गतिशीलता को समझने के लिए राजनीतिक सत्ता के परिवर्तन को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। राजधानी का स्थानांतरण, सैन्य अभियानों की दिशा, क्षेत्रीय प्रशासन का पुनर्गठन और शासकों की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का नगरों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता था। अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी को राजधानी के रूप में विकसित करना तथा बाद में राजनीतिक और भौगोलिक परिस्थितियों के कारण राजधानी का पुनः स्थानांतरण इस गतिशीलता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसी प्रकार शाहजहाँ के काल में दिल्ली के विकास ने शाही सत्ता और नगरीय निर्माण के संबंध को स्पष्ट किया।

मुगलकालीन नगरों का ऐतिहासिक अध्ययन वर्तमान भारतीय नगरीय इतिहास को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है। इन नगरों में विकसित बाजार, मार्ग, किले, धार्मिक भवन, आवासीय संरचनाएँ और उद्यान आज भी उस काल की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि राजनीतिक सत्ता किस प्रकार नगरीय संरचना को प्रभावित करती थी तथा आर्थिक गतिविधियाँ किस प्रकार नगरों के विस्तार और परिवर्तन का आधार बनती थीं।

मुगलकालीन शहरी केन्द्रों की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक विकास

भारत के नगरीकरण के इतिहास का एक महत्वपूर्ण भाग मुगल शहरी केंद्रों के विकास और स्थापना को समर्पित है। वर्ष 1526 में बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों ने तीव्र नगरीकरण के एक नए युग में प्रवेश किया। यद्यपि भारत में मध्यकाल तथा उससे भी पूर्व अनेक शहरी बस्तियाँ विद्यमान थीं, फिर भी मुगल शासकों ने नगर निर्माण और प्रशासन की एक नवीन शैली का विकास किया, जो उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं, सांस्कृतिक मूल्यों तथा आर्थिक उद्देश्यों को प्रतिबिंबित करती थी। मुगलों ने फ़ारसी, मध्य एशियाई तथा भारतीय स्थानीय परंपराओं से प्रेरणा लेकर ऐसे विशाल शहरी केंद्रों का निर्माण और विस्तार किया, जो उनके साम्राज्य, प्रशासन, सैन्य व्यवस्था, व्यापार, संस्कृति और शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने। ये नगर केवल निवास स्थान नहीं थे, बल्कि साम्राज्य की शक्ति, वैभव और समृद्धि के प्रतीक भी थे, जिन्हें शासन को अधिक प्रभावी बनाने तथा साम्राज्य की भव्यता प्रदर्शित करने के उद्देश्य से

विकसित किया गया था। विशाल जनसंख्या तथा समृद्ध आर्थिक गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए मुगल नगरों की स्थापना नदियों, उपजाऊ भूमि तथा प्रमुख व्यापारिक मार्गों के समीप की गई। मुगल शासकों की यह दूरदर्शी और रणनीतिक नगर नियोजन नीति उनके साम्राज्य में शहरी केंद्रों के निरंतर विस्तार और विकास का प्रमुख आधार बनी।

मुगल शहरी केंद्रों का ऐतिहासिक विकास विभिन्न मुगल शासकों की नीतियों और दूरदृष्टि के अनुरूप आकार ग्रहण करता गया। 1526 में प्रथम पानीपत के युद्ध के पश्चात बाबर ने मुगल साम्राज्य की स्थापना की और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने में नगरों के महत्व को समझा। यद्यपि उसका शासनकाल अल्पकालिक था, फिर भी उसने फ़ारसी शैली के उद्यानों और राजमहलों की स्थापत्य परंपरा को भारत में प्रोत्साहित किया, जो आगे चलकर मुगल नगरों की विशिष्ट पहचान बनी। हुमायूँ के शासनकाल में राजनीतिक अस्थिरता अवश्य रही, किंतु उसने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी रखे, जिससे नगरीकरण की प्रक्रिया निरंतर आगे बढ़ती रही। सम्राट अकबर के शासनकाल में प्रशासनिक सुधारों और साम्राज्य के व्यापक विस्तार के कारण उत्तर भारत के शहरी केंद्रों का तीव्र विकास हुआ। अकबर ने फ़तेहपुर सीकरी को अपनी शाही राजधानी बनाकर नियोजित नगरीय विकास की उत्कृष्ट अवधारणा प्रस्तुत की, जहाँ राजमहलों, प्रशासनिक भवनों, धार्मिक स्थलों, बाज़ारों, उद्यानों तथा आवासीय क्षेत्रों का सुव्यवस्थित निर्माण किया गया। यद्यपि फ़तेहपुर सीकरी अल्प समय के लिए ही राजधानी रही, फिर भी इसे आज भी मुगल नगर नियोजन और स्थापत्य कला की उत्कृष्ट कृति माना जाता है। इसी काल में आगरा भी एक प्रमुख शाही महानगर के रूप में विकसित हुआ, जहाँ व्यापार, प्रशासनिक महत्व तथा विशाल स्थापत्य संरचनाओं के कारण यह विश्व के सबसे बड़े और समृद्ध नगरों में सम्मिलित हो गया।

जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल नगर नियोजन और स्थापत्य कला अपने उत्कर्ष पर पहुँची। जहाँगीर ने व्यापार, कला और संस्कृति को संरक्षण देने के साथ-साथ सार्वजनिक स्थलों, उद्यानों तथा सांस्कृतिक संस्थानों के विकास को बढ़ावा दिया, जिससे नगर अधिक सुंदर और आकर्षक बने। शाहजहाँ ने शाहजहानाबाद (वर्तमान पुरानी दिल्ली) को नई शाही राजधानी के रूप में स्थापित किया, जिसने भारतीय नगरीय परिदृश्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया। इस नगर की चौड़ी सड़कों, सुदृढ़ परकोटों, भव्य द्वारों, सुव्यवस्थित बाज़ारों, विशाल मस्जिदों, शाही महलों तथा सामाजिक और व्यावसायिक वर्गों के आधार पर व्यवस्थित आवासीय क्षेत्रों ने इसके सुनियोजित विकास को प्रदर्शित किया। लाल किला, जामा मस्जिद, चाँदनी चौक तथा असंख्य उद्यान मुगल शासन की परिष्कृत नगर नियोजन शैली के उत्कृष्ट उदाहरण थे। इस काल में मुगल नगर अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केंद्र बन गए, जहाँ यूरोप, फ़ारस, मध्य एशिया तथा अन्य क्षेत्रों से व्यापारी, यात्री, राजनयिक, शिल्पकार और विद्वान आते थे। आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा बौद्धिक उन्नति के परिणामस्वरूप ये नगर बहुसांस्कृतिक समाजों के रूप में विकसित हुए, जिन्होंने भारतीय इतिहास में शहरी सभ्यता के विकास को नई दिशा प्रदान की।

मुगल नगरों का नगरीय नियोजन एवं स्थापत्य विशेषताएँ

मुगल नगर मध्यकालीन भारतीय उपमहाद्वीप के सर्वश्रेष्ठ नगरीय नियोजन के उत्कृष्ट उदाहरणों में गिने जाते हैं। मुगल नगरों का नियोजन सम्राटों की राजनीतिक शक्ति, सांस्कृतिक परिष्कार तथा आर्थिक समृद्धि का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब था। मुगल शासकों ने फ़ारसी, मध्य एशियाई तथा भारतीय स्थानीय नगर नियोजन परंपराओं से प्रेरणा लेकर एक ऐसी विशिष्ट स्थापत्य शैली विकसित की, जो सौंदर्य, उपयोगिता तथा सुव्यवस्थित योजना का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती थी। उनके द्वारा स्थापित नगरों की योजना अत्यंत सुनियोजित होती थी, ताकि वे प्रशासनिक मुख्यालय, व्यापारिक केंद्र, सैन्य दुर्ग तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें। इन नगरों में राजमहलों, प्रशासनिक भवनों, उद्यानों, बाज़ारों, धार्मिक स्थलों, आवासीय क्षेत्रों तथा सार्वजनिक सुविधाओं का समन्वित विकास किया जाता था, जो समग्र नगरीय नियोजन की उत्कृष्ट अवधारणा को प्रदर्शित करता है। मुगल नगरों की यह स्थापत्य एवं नियोजन परंपरा आज भी अनेक भारतीय शहरों की शहरी संरचना और स्थापत्य विरासत को प्रभावित करती है तथा आधुनिक नगरीय विकास के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है।

1 सामरिक स्थान चयन एवं नगर नियोजन

मुगल सम्राटों द्वारा नगरों की योजना बनाते समय सामरिक, आर्थिक तथा पर्यावरणीय सभी पहलुओं का विशेष ध्यान रखा जाता था। अधिकांश मुगल नगरों की स्थापना यमुना, गंगा तथा रावी जैसी प्रमुख नदियों के किनारे की गई थी। इससे जल की पर्याप्त उपलब्धता, कृषि के लिए उपजाऊ भूमि तथा आवागमन की सुविधाजनक व्यवस्था सुनिश्चित होती थी। इसके अतिरिक्त, इन नगरों का प्रमुख व्यापारिक मार्गों के निकट स्थित होना साम्राज्य के विभिन्न भागों के बीच व्यापार, संचार और प्रशासनिक संपर्क को सुदृढ़ बनाता था। अपनी अनुकूल भौगोलिक स्थिति के कारण इलाहाबाद, आगरा, दिल्ली और लाहौर जैसे नगर प्रमुख प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। इन नगरों की संरचना अत्यंत सुविचारित थी, जिसमें प्रशासनिक भवनों, सार्वजनिक स्थलों, बाज़ारों, आवासीय क्षेत्रों तथा धार्मिक स्थलों के लिए अलग-अलग और सुव्यवस्थित भाग निर्धारित किए गए थे। इस प्रकार, मुगल नगर नियोजन में सुरक्षा, आर्थिक विकास, जनसुविधा तथा पर्यावरणीय संतुलन का प्रभावी समन्वय देखने को मिलता है।

2 किलाबंद नगर एवं रक्षात्मक स्थापत्य कला

मुगल नगर नियोजन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष सुरक्षा व्यवस्था था। लगभग प्रत्येक प्रमुख मुगल नगर को ऊँची पत्थर की प्राचीरों, सुदृढ़ बुर्जों, प्रहरी मीनारों, विशाल प्रवेश द्वारों तथा सुरक्षात्मक खाइयों (परिखाओं) से सुसज्जित किया जाता था। ये किलाबंद संरचनाएँ बाहरी आक्रमणों और आंतरिक अशांति से नगरवासियों, प्रशासनिक संस्थानों, सैन्य ठिकानों तथा शाही परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करती थीं। आगरा का किला, दिल्ली का लाल किला तथा लाहौर का किला ऐसे भव्य स्थापत्य उदाहरण हैं, जो न केवल शाही परिवार के निवास स्थान थे, बल्कि राजनीतिक और सैन्य शक्ति के प्रमुख केंद्र भी थे। इन

किलों की विशाल प्राचीरें, भव्य द्वार, मजबूत रक्षा व्यवस्था तथा जटिल सैन्य स्थापत्य मुगल शासकों की उच्च स्तरीय स्थापत्य कला, अभियंत्रण कौशल तथा सामरिक दूरदर्शिता के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। इनके निर्माण में सुरक्षा और सौंदर्य दोनों का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है, जो मुगल स्थापत्य की विशिष्ट पहचान है।

3 शाही महल एवं प्रशासनिक परिसर

प्रत्येक मुगल नगर के केंद्र में एक भव्य शाही महल स्थित होता था। ये महल केवल सम्राट और शाही परिवार के निवास स्थान ही नहीं थे, बल्कि साम्राज्य के प्रशासनिक कार्यों के प्रमुख केंद्र भी थे। इन विशाल महल परिसरों में खुले प्रांगण, सुंदर उद्यान, आकर्षक फव्वारे, प्रशासनिक कार्यालय, निजी कक्ष तथा राजकीय समारोहों के लिए विशेष सभास्थल बनाए जाते थे। दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास जैसे भवन मुगल साम्राज्य की सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था तथा न्याय प्रणाली के उत्कृष्ट प्रतीक थे। इन भवनों में सम्राट सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार की सभाएँ आयोजित करते थे तथा राज्य के महत्वपूर्ण प्रशासनिक निर्णय लिए जाते थे। इन स्थापत्य कृतियों की भव्यता संगमरमर, लाल बलुआ पत्थर, सुंदर नक्काशी, विशाल गुंबदों, मेहराबों तथा बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई (पच्चीकारी) के व्यापक उपयोग से और भी बढ़ जाती थी। इनकी कलात्मकता और स्थापत्य उत्कृष्टता मुगल वास्तुकला की समृद्ध परंपरा तथा शिल्प कौशल का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

4 सड़क नेटवर्क एवं मार्ग विन्यास

मुगल नगरों का सुव्यवस्थित सड़क नेटवर्क उनकी उत्कृष्ट नगरीय योजना का महत्वपूर्ण प्रमाण था। नगरों में चौड़ी और सुनियोजित मुख्य सड़कों का निर्माण किया जाता था, जो प्रमुख सार्वजनिक भवनों, बाजारों, धार्मिक स्थलों तथा विभिन्न आवासीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ती थीं। इन मुख्य मार्गों को इस प्रकार विकसित किया गया था कि सेना, व्यापारिक वस्तुओं तथा आम लोगों का आवागमन सुचारु और सुविधाजनक रूप से हो सके। इसके अतिरिक्त, नगर की द्वितीयक सड़कों का जाल आवासीय मोहल्लों तथा व्यावसायिक क्षेत्रों को जोड़कर परिवहन व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाता था।

शाहजहानाबाद का चाँदनी चौक जैसे बाजार मार्ग मुगल नगरों के प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र थे, जहाँ अनेक दुकानें, गोदाम तथा शिल्पकारों की कार्यशालाएँ स्थित थीं। ये सड़कें केवल व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र ही नहीं थीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। मुगल नगरों की सुविचारित सड़क व्यवस्था ने न केवल दैनिक जीवन को अधिक व्यवस्थित और सुगम बनाया, बल्कि व्यापार, संचार तथा आर्थिक विकास को भी उल्लेखनीय रूप से प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, सड़क नेटवर्क और मार्ग विन्यास मुगल नगर नियोजन की दक्षता, दूरदर्शिता तथा आर्थिक समृद्धि के प्रमुख आधार थे।

5 बाज़ार एवं वाणिज्यिक केंद्र

मुगल नगरों का विकास उनके व्यापार और वाणिज्य से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। बड़े-बड़े बाज़ारों और वाणिज्यिक केंद्रों की स्थापना प्रायः नगर के केंद्रीय भाग, शाही परिसरों तथा प्रमुख मार्गों के निकट की जाती थी, जिससे व्यापारिक गतिविधियों का सुचारु संचालन सुनिश्चित हो सके। इन बाज़ारों में वस्त्र, आभूषण, मसाले, कालीन, धातु शिल्प, चमड़े के उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, इत्र तथा अन्य अनेक प्रकार की वस्तुओं का व्यापक व्यापार होता था। मुगल साम्राज्य के ये व्यापारिक केंद्र अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए थे, जहाँ यूरोप, अरब, फ़ारस तथा मध्य एशिया से व्यापारी नियमित रूप से व्यापार करने आते थे। इन नगरों में यात्रारत व्यापारियों और कारवाँ के ठहरने तथा उनकी सुविधाओं के लिए विशेष रूप से सराय (कारवाँसराय) का निर्माण किया जाता था। इन सरायों में आवास, भोजन, पशुओं के ठहरने तथा माल के सुरक्षित भंडारण की व्यवस्था उपलब्ध रहती थी। मुगल नगरों की सुव्यवस्थित व्यापारिक संरचना ने न केवल आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया, बल्कि भारत को अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क से भी सुदृढ़ रूप से जोड़ दिया। इस प्रकार, बाज़ार एवं वाणिज्यिक केंद्र मुगल नगरों की आर्थिक उन्नति, शहरी विकास तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रमुख आधार थे।

6 उद्यान एवं खुले सार्वजनिक स्थल

उद्यान मुगल नगर नियोजन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग थे और वे प्रकृति तथा सौंदर्य के प्रति मुगल सम्राटों की गहरी रुचि और संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करते थे। फ़ारसी भू-दृश्य (लैंडस्केप) वास्तुकला से प्रेरित होकर मुगलों ने चारबाग़ (चार भागों में विभाजित उद्यान) की अवधारणा को विकसित किया, जो समरसता, संतुलन तथा स्वर्गीय सौंदर्य का प्रतीक मानी जाती थी। इन उद्यानों में बहते हुए जलमार्ग, आकर्षक फव्वारे, सीढ़ीनुमा चबूतरे, रंग-बिरंगे पुष्प, फलदार वृक्ष तथा छायादार पथों का सुंदर समन्वय किया जाता था। शालीमार बाग़ और निशात बाग़ जैसे प्रसिद्ध उद्यान मुगल स्थापत्य कला और सौंदर्यबोध के उत्कृष्ट उदाहरण हैं तथा आज भी उनकी कलात्मक श्रेष्ठता के प्रतीक माने जाते हैं। मनोरंजन और विश्राम के अतिरिक्त, ये उद्यान नगरों के पर्यावरण को संतुलित रखने, जलवायु को अनुकूल बनाने तथा शहरी सौंदर्य को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। इस प्रकार, मुगल उद्यान केवल मनोरंजन के स्थल नहीं थे, बल्कि वे पर्यावरण संरक्षण, शहरी नियोजन और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण अंग भी थे।

7 धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थापत्य

मुगल नगरों में धार्मिक भवनों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। भव्य मस्जिदें केवल इबादत (उपासना) के स्थल ही नहीं थीं, बल्कि वे शिक्षा, सामाजिक जीवन तथा सामुदायिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र के रूप में भी कार्य करती थीं। दिल्ली की जामा मस्जिद मुगल धार्मिक स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अपने विशाल प्रांगण, आकर्षक गुंबदों, ऊँची मीनारों तथा सुंदर अरबी-फ़ारसी सुलेख (कैलिग्राफी) के लिए प्रसिद्ध है। मस्जिदों के साथ-साथ मुगल नगरों में विभिन्न धर्मों और समुदायों के मंदिर, दरगाहें, तीर्थस्थल तथा

अन्य धार्मिक संस्थान भी स्थापित थे, जो उस समय के शहरी समाज की धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते थे। इसके अतिरिक्त, मदरसों, पुस्तकालयों तथा अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों ने इन नगरों के बौद्धिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थापत्य ने मुगल नगरों को केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि ज्ञान, शिक्षा, कला और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रमुख केंद्रों के रूप में भी प्रतिष्ठित किया।

8 आवासीय मोहल्ले (आवासीय पड़ोस)

मुगल नगरों के आवासीय क्षेत्र व्यवसाय, सामाजिक स्थिति तथा सामुदायिक संबंधों के आधार पर सुव्यवस्थित रूप से विभाजित किए गए थे। उच्च पदस्थ अधिकारी, अमीर तथा सामंत प्रायः शाही महलों और प्रशासनिक परिसरों के निकट निवास करते थे, जबकि व्यापारी, शिल्पकार, सैनिक तथा श्रमिकों के लिए नगर के विभिन्न भागों में अलग-अलग आवासीय मोहल्लों का विकास किया गया था। इस प्रकार की व्यवस्था से प्रशासनिक कार्यों में सुविधा होने के साथ-साथ सामाजिक संगठन भी प्रभावी बना रहता था।

मुगल कालीन मकानों का निर्माण प्रायः एक केंद्रीय आँगन (प्रांगण) के चारों ओर किया जाता था, जिससे प्राकृतिक प्रकाश और वायु का पर्याप्त संचार बना रहता था। यह स्थापत्य शैली निवासियों को गोपनीयता प्रदान करने के साथ-साथ अत्यधिक गर्मी और प्रतिकूल जलवायु से भी सुरक्षा देती थी। आवासीय क्षेत्रों को आपस में संकरी गलियों द्वारा जोड़ा जाता था, जिससे सामाजिक संपर्क, पारस्परिक सहयोग तथा सामुदायिक एकता को बढ़ावा मिलता था।

इन आवासीय मोहल्लों में स्थानीय बाज़ार, कुएँ, मस्जिदें, सार्वजनिक स्थल तथा अन्य आवश्यक सुविधाएँ भी विकसित की जाती थीं, जिससे प्रत्येक क्षेत्र एक आत्मनिर्भर शहरी इकाई के रूप में कार्य कर सके। इस प्रकार, मुगल नगरों के आवासीय पड़ोस केवल रहने के स्थान नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सशक्त केंद्र भी थे, जहाँ सामुदायिक सहभागिता और सुव्यवस्थित शहरी जीवन का उत्कृष्ट स्वरूप देखने को मिलता था।

9 जल आपूर्ति एवं सार्वजनिक आधारभूत संरचना

मुगल नगर नियोजन की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक उनकी सुव्यवस्थित जल प्रबंधन प्रणाली थी। नगरों में पेयजल, सिंचाई, घरेलू उपयोग तथा उद्यानों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नदियों, नहरों, जलाशयों, कुओं, बावड़ियों तथा भूमिगत जल नालियों का प्रभावी उपयोग किया जाता था। इन जल स्रोतों का निर्माण और संरक्षण इस प्रकार किया जाता था कि वर्षभर पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध रहे तथा नगरवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति सुचारु रूप से होती रहे।

स्वच्छता बनाए रखने तथा वर्षा के समय जलभराव और बाढ़ जैसी समस्याओं से बचाव के लिए उन्नत जल निकासी (ड्रेनेज) प्रणाली विकसित की गई थी। नगरों में जल निकासी के

लिए सुनियोजित नालियों का निर्माण किया जाता था, जिससे गंदे पानी का उचित निष्कासन संभव हो सके और सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा हो सके।

इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक स्नानागार, फव्वारे, पुल, सड़कें तथा सराय (कारवाँसराय) जैसी आधारभूत सुविधाओं का निर्माण भी मुगल नगरों की महत्वपूर्ण विशेषता थी। इन संरचनाओं ने नगरवासियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया, यात्रियों और व्यापारियों की सुविधाओं में वृद्धि की तथा साम्राज्य के विभिन्न भागों के बीच संचार और व्यापार को अधिक सुगम एवं प्रभावी बनाया। इन सभी आधारभूत संरचनाओं से मुगल शासकों की प्रशासनिक दक्षता, दूरदर्शी नगरीय योजना तथा उच्च स्तरीय अभियंत्रण (इंजीनियरिंग) कौशल का परिचय मिलता है। उनकी विकसित जल प्रबंधन और सार्वजनिक अवसंरचना प्रणाली ने मुगल नगरों को स्वच्छ, समृद्ध, संगठित और टिकाऊ शहरी केंद्रों के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10 स्थापत्य शैली एवं अलंकरणात्मक तत्व

मुगल स्थापत्य कला अपनी विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें फ़ारसी, इस्लामी, मध्य एशियाई तथा भारतीय कलात्मक परंपराओं का अत्यंत सुंदर और संतुलित समन्वय देखने को मिलता है। मुगल कालीन भवनों के निर्माण में लाल बलुआ पत्थर, श्वेत संगमरमर, चूना पत्थर तथा ईंट जैसी उच्च गुणवत्ता वाली निर्माण सामग्री का व्यापक उपयोग किया जाता था। इन भवनों की स्थापत्य विशेषताओं में विशाल गुंबद, नुकीली मेहराबें, ऊँची एवं पतली मीनारें, अलंकृत झरोखे, सुंदर नक्काशीदार स्तंभ, सजावटी जालियाँ (पत्थर की जालीदार खिड़कियाँ), पुष्पीय आकृतियाँ, ज्यामितीय डिज़ाइन तथा कुरआन की आयतों से युक्त उत्कृष्ट सुलेख (कैलिग्राफी) प्रमुख थे।

मुगल स्थापत्य की सबसे उत्कृष्ट कलात्मक तकनीकों में पच्चीकारी (पीएत्रा ड्यूरा) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस तकनीक में संगमरमर की सतह पर अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई करके अत्यंत आकर्षक और सूक्ष्म कलाकृतियाँ बनाई जाती थीं। मुगल काल में यह कला अपने सर्वोच्च विकास और परिष्कार तक पहुँची, जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण ताजमहल में देखा जा सकता है।

इन सभी अलंकरणात्मक तत्वों ने मुगल स्थापत्य को केवल मजबूत और टिकाऊ ही नहीं बनाया, बल्कि उसे अद्वितीय सौंदर्य, कलात्मक उत्कृष्टता और भव्यता भी प्रदान की। परिणामस्वरूप, मुगल वास्तुकला विश्वभर में अपनी उत्कृष्ट शिल्पकला, स्थापत्य नवाचार तथा कलात्मक वैभव के लिए प्रसिद्ध हुई और आज भी भारतीय सांस्कृतिक एवं स्थापत्य विरासत की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में गिनी जाती है।

मुगल नगरों की प्रशासनिक संरचना एवं शासन व्यवस्था

मुगल साम्राज्य की राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि तथा शहरी विकास का आधार उसकी सुदृढ़ प्रशासनिक संरचना और प्रभावी शासन व्यवस्था थी। मुगल सम्राटों ने भारतीय उपमहाद्वीप के विशाल एवं विविधतापूर्ण साम्राज्य पर शासन करने के लिए अत्यंत

सुव्यवस्थित, केंद्रीकृत तथा संगठित प्रशासनिक प्रणाली विकसित की थी। मुगल नगर केवल निवास और व्यापार के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे राजनीतिक एवं सैन्य शक्ति के प्रमुख केंद्र, कानून एवं व्यवस्था के संचालन के स्थान तथा सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र भी थे। मुगल नगरों का प्रशासन मुख्य रूप से प्रभावी कर संग्रह, शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने, व्यापार का नियमन, सार्वजनिक आधारभूत संरचना के विकास तथा नगरवासियों के कल्याण पर आधारित था। प्रशासनिक व्यवस्था के सर्वोच्च स्तर पर सम्राट होता था, जिसके पास संपूर्ण शासन की सर्वोच्च एवं निरंकुश सत्ता निहित होती थी। सम्राट के आदेशों को साम्राज्य के विभिन्न भागों तक पहुँचाने और उन्हें प्रभावी रूप से लागू करने के लिए प्रांतीय राज्यपालों, सैन्य अधिकारियों, राजस्व अधिकारियों, न्यायिक अधिकारियों तथा नगर प्रशासकों का एक सुव्यवस्थित तंत्र कार्य करता था। यह प्रशासनिक नेटवर्क शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने तथा साम्राज्य की एकता और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

यद्यपि मुगल प्रशासन अत्यधिक केंद्रीकृत था, फिर भी प्रांतों को स्थानीय प्रशासन संचालित करने के लिए पर्याप्त अधिकार प्रदान किए गए थे। साम्राज्य को अनेक सूबों (प्रांतों) में विभाजित किया गया था और प्रत्येक सूबे का प्रशासन सम्राट द्वारा नियुक्त सूबेदार के अधीन होता था। सूबेदार प्रांत के प्रशासन, कर संग्रह, सैन्य व्यवस्था तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी होता था। प्रमुख नगर प्रांतीय मुख्यालय के रूप में कार्य करते थे, जहाँ से विभिन्न प्रशासनिक विभागों का संचालन किया जाता था। सूबेदार की सहायता के लिए अनेक विशिष्ट अधिकारी नियुक्त किए जाते थे। दीवान नगर की वित्तीय व्यवस्था तथा राजस्व संग्रह का प्रभारी होता था, बख्शी सैन्य अधिकारियों एवं सैनिकों की नियुक्ति तथा वेतन व्यवस्था का संचालन करता था, काज़ी इस्लामी कानून (शरीयत) के अनुसार न्याय प्रदान करता था, जबकि कोतवाल नगर में शांति, सुरक्षा तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने का उत्तरदायित्व निभाता था। इस प्रकार विभिन्न अधिकारियों के बीच कार्यों का स्पष्ट विभाजन होने से प्रशासनिक व्यवस्था अधिक संगठित, प्रभावी तथा उत्तरदायी बनती थी और शासन का अत्यधिक केंद्रीकरण भी कम होता था। यही सुव्यवस्थित प्रशासनिक संरचना मुगल नगरों के सफल संचालन, आर्थिक प्रगति तथा सामाजिक स्थिरता का प्रमुख आधार थी।

कोतवाल का कार्यालय मुगल नगर प्रशासन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग था और नगरों के दैनिक प्रबंधन की मुख्य जिम्मेदारी उसी के पास होती थी। कोतवाल नगर का प्रमुख प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी होता था, जिसके दायित्वों में सार्वजनिक सुरक्षा बनाए रखना, अपराधों की रोकथाम, बाज़ारों का नियमन, स्वच्छता व्यवस्था की देखरेख, सामाजिक नैतिकता की निगरानी तथा छोटे-मोटे विवादों का निपटारा करना शामिल था। वह नगरवासियों का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखता था, संदिग्ध व्यक्तियों पर निगरानी रखता था, रात्रि गश्त की व्यवस्था करता था तथा व्यापारियों और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करता था। इसके अतिरिक्त, स्थानीय बाज़ारों में आवश्यक वस्तुओं की गुणवत्ता तथा उनके उचित मूल्य की निगरानी भी कोतवाल की जिम्मेदारी थी, जिससे उपभोक्ताओं को अनुचित

व्यापारिक गतिविधियों और धोखाधड़ी से बचाया जा सके। नगर के निर्माण कार्यों का नियमन, भवन निर्माण संबंधी नियमों का पालन, सार्वजनिक सड़कों का रखरखाव, अग्निकांड की रोकथाम तथा नगर के नियमों को प्रभावी ढंग से लागू करना भी उसके प्रमुख कर्तव्यों में सम्मिलित था। इस प्रकार, कोतवाल अपनी बहुआयामी जिम्मेदारियों के माध्यम से मुगल नगरों की सुरक्षा, सुव्यवस्था तथा सुचारु प्रशासन सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

निष्कर्ष

मुगलकालीन नगरों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस काल की नगरीय व्यवस्था निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी थी। नगरों का विकास केवल जनसंख्या वृद्धि या भवन निर्माण का परिणाम नहीं था, बल्कि राजनीतिक सत्ता, प्रशासनिक आवश्यकताओं, व्यापारिक गतिविधियों, शिल्प उत्पादन, परिवहन व्यवस्था तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। शाही राजधानियों ने प्रशासन और संस्कृति के केंद्र के रूप में महत्त्व प्राप्त किया, जबकि व्यापारिक एवं शिल्प-प्रधान नगरों ने साम्राज्य की आर्थिक संरचना को सुदृढ़ किया। राजधानी परिवर्तन और राजनीतिक परिस्थितियों में बदलाव के साथ नगरों के महत्त्व में भी परिवर्तन होता रहा। नगरों में विभिन्न सामाजिक एवं पेशागत समूहों के आगमन ने सामाजिक विविधता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। बाजारों, सरायों, सड़कों, किलों, मस्जिदों, महलों और उद्यानों ने नगरीय जीवन की विशिष्ट संरचना निर्मित की। इस प्रकार मुगलकालीन नगर स्थिर भौगोलिक इकाइयाँ न होकर राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक शक्तियों के निरंतर प्रभाव से विकसित होने वाले जीवंत केंद्र थे। उनकी ऐतिहासिक गतिशीलता का अध्ययन मुगल साम्राज्य की व्यापक संरचना तथा मध्यकालीन भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था के परिवर्तनशील स्वरूप को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. किनरा, राजीव। (2012)। मुगल बहुलवाद के इतिहास और इतिहासलेखन का पुनर्मूल्यांकन। रीओरिएंट। 5(2), 137-182।
2. वेस्कोट, जेम्स एवं फिशर, रियो। (2013)। अंतर्भूमि की अंतर्भूमि: सल्तनत और मुगल बंगाल की बदलती राजधानी नगरियाँ। इस्लामिक आर्किटेक्चर का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 11(2), 241-266।
3. हुसैन, सज्जाद। (2013)। पुराने ढाका में मुगल बस्तियों को एकीकृत करने की रणनीतियाँ। वास्तुकला अनुसंधान की सीमाएँ। 2(4), 420-434।
4. हबीब, इरफान। (2011)। मुगल कालीन नगर के विकास का मानचित्रण: वृंदावन। पीपुल्स हिस्ट्री में अध्ययन। 6(1), 1659-1707।

5. हीस्टरमैन, जे। (2004)। मुगल साम्राज्य की सामाजिक गतिशीलता: एक संक्षिप्त परिचय। *द इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ द ओरिएंट जर्नल*। 47(3), 292-297।
6. घोष, राजश्री। (2010)। मुगल दरबारी उत्सव की गतिशीलता: नौरोज़ का एक अध्ययन। *इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू*। 44(2), 198-211।
7. ताका, आमेर। (2010)। मुगल काल के दौरान सिरहिंद में व्यापार और वाणिज्य। 5(2), 3006-2853।
8. ताका, आमेर एवं लैम, विवियन। (2011)। मुगल काल के दौरान सिरहिंद का सामाजिक-आर्थिक जीवन। 5(1), 34-39।
9. सिंह, जोगिंदर एवं ताका, आमेर। (2014)। मध्यकालीन भारत की सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता: एक व्यापक समीक्षा। 2(1), 2583-9993।
10. कुमार, अरुण। (2014)। मुगल शासन के अंतर्गत कश्मीर में आर्थिक विकास का अध्ययन। *कला और मानविकी में अनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल*। 3(1), 130-134।
11. अहमद, रिजवान। (2014)। मुगल भारत में भोजन और व्यंजन: एक ऐतिहासिक विश्लेषण। 29(1), 168-188।
12. सिंह, नीरज एवं मित्तल, संगीता। (2014)। केंद्र से परिधि तक: लाल किले के बदलते भाग्य। *उभरती प्रौद्योगिकियों और नवाचार अनुसंधान का जर्नल*। 10(10), 47-65।